3 दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो

गोपालदास सक्सेना नीरज
(जन्म : सन् 1925)

नीरज का जन्म पुरावली गाँव ज़िला इटावा (उ.प्र.) में हुआ था। उन्होंने काम करते-करते हिन्दी साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. किया। उन्होंने मेरठ कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य किया। इसके बाद अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में अध्यापक नियुक्त हुए। यहीं पर स्थायी निवास बनाकर रहने लगे। कवि संमेलनों में उन्हें अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई। वे बम्बई के फिल्म जगत में 'नई उमर की नई फसल' नामक फिल्म के 'कारवाँ गुजर गया....' गीत से बहुत प्रसिद्ध हुए । उनके गीत कई फिल्मों में वर्षों तक जारी रहे। बम्बई से बहुत जल्द उनका मन उचट गया और फिल्म नगरी को अलविदा कहकर मुक्त जीवन व्यतीत करने अलीगढ़ लौट आये।

उन्होंने 17 कविता संग्रह तथा गीत संग्रह लिखे। उन्हें 'पद्मश्री' एवं 'पद्मभूषण' सम्मान से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें भाषा संस्थान का सदस्य नामित किया था।

प्रस्तुत गीत में शक्ति और महानता का निरूपण है। प्रेम में तलवारों और बमों से अधिक ताकत होती है। शत्रुओं को पशुबल से ही नहीं जीत सकते, स्नेह की शक्ति से जीत सकते हैं। स्नेहपूर्ण व्यवहार करके हम सबके साथ प्यार बाँट सकते हैं। विश्व युद्धों की ज़हरीली छाया से बच सकता है। अमन और चैन के गीत चारों ओर गूँज सकते हैं। यही आशावाद यहाँ व्यक्त हुआ है।

यह नफरत की बारूद न बिखराओ साथी!
यह युद्धों का जहरीला नारा बंद करो,
जो प्यार तिजोरी-सेफों में है तड़प रहा
उसके बंधन खोलो, उसको स्वच्छंद करो!
मृत मानवता जिंदगी माँगती है तुमसे
दो बूँद स्नेह की उसके प्राणों में ढालो,
आदम का जो यह स्वर्ग हो रहा है मरघट
जाओ ममता का एक दीया उसमें बालो!

निर्माण घृणा से नहीं, प्यार से होता है;
सुख-शांति खड्ग पर नहीं, फूल पर चलते हैं,
आदमी देह से नहीं, नेह से जीता है,
बमों से नहीं, बोल से बज्र पिघलते हैं।
तुम डरो न, आगे आओ निज भुज फैलाओ
है प्यार जहाँ, तलवार वहाँ झुक जाती है,
पतवार प्रेम की छू जाए जिस किश्ती को
मँझधार पार उसको खुद पहुँचा आती है।

जिसके अधरों पर गीत प्रेम का जीवित है
वह हँसकर तूफानों को गोद खिलाता है,
जिसके सीने में दर्द छिपा है दुनिया का
सैलाबों से बढ़कर वह हाथ मिलता है।
कितना ही क्यों न बड़ा हो घाव हृदय में, पर
सच कहता हूँ यह प्यार उसे भर सकता है,
कैसा ही बागी-दुश्मन हो आदमी मगर
बस एक अश्रु का तार कैद कर सकता है।

कितना ही ऊबड़-खाबड़ हो रास्ता किंतु
यह प्यार फूल-सा तुम्हें उठा ले जाएगा,
कैसी ही भीषण अँधियारी हो धुआँधुंध
पर एक स्नेह का दीप सुबह ले आएगा।

मैं इसीलिए अक्सर लोगों से कहता हूँ,
जिस जगह बँटे नफरत, जा प्यार लुटाओ तुम
जो चोट करे तुम पर उसके चूम लो हाथ,
जो गाली दे उसको आशीष पिन्हाओ तुम

तुम शांति नहीं ला पाए युद्धों के द्वारा
अब फेंक जरा तलवार, प्यार लेकर देखो,
सच मानो निश्चय विजय तुम्हारी ही होगी
दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो।